परिशिष्ट

अमरकांत का साक्षात्कार
अमरकांत के छाया चित्र

अमरकांत जी का यह साक्षात्कार दिनांक **16-12-2008** को उनके निवास स्थान पर लिया गया। इस साक्षात्कार के माध्यम से कोशिश की गयी है कि इनके कथा साहित्य पर बातचीत हो। साक्षात्कार के दौरान अमरकांत जी के सुपुत्र श्री अरविन्द जी का सहयोग रहा है। उनके प्रति हम आभारी हैं।

साक्षात्कार हेतु जाते समय प्रश्नावली बना ली गयी थी। अमरकांत जैसी शख्शियत के समक्ष प्रस्तुत होने पर प्रश्न का वह मायने नहीं रह गया जो अन्यत्र होता है। अमरकांत जी ने पूरे स्नेह से साक्षात्कार दिया। उनसे मिलने पर समझ पाया उनके कथा साहित्य का राज। उन्होंने कथा साहित्य के मूल में मध्यवर्गीय समाज की विसंगतियों के आने कारणों पर प्रकाश डालते हुये स्वीकार किया है कि उनका कथा साहित्य मध्यवर्गीय समाज की समस्यायों के इर्द-गिर्द घूमने वाला है।

अमरकांत जी द्वारा दिये गये साक्षात्कार का मूल रूप इस प्रकार है।

संजय कुमार: अमरकांत जी शहर एवं गाँव की जिन्दगी में क्या अन्तर है?

अमरकांत जी: गाँव में शहर की तरह सुविधाएँ नहीं हैं। हलांकि गाँव में भी थोड़ा शहर का माहौल आ रहा है। विजली भी आ गई, रेडियो, टीवी आ गयी है। इसके बावजूद विकास शहर की तरह नहीं है। गाँव भी धीरे-धीरे शहर की तरह होते जायेगें। गाँव तथा शहर के अंतर को छोड़ दें। अंतर तो दो शहरों में देखा जा रहा है। दिल्ली और इलाहाबाद में अंतर देखा जा रहा है। दिल्ली में मेट्रो आ गया। नौकरियों की ज्यादा सुविधा है। लोग नौकरियों के लिये यहाँ से दिल्ली जा रहे हैं। लोगों को उम्मीद रहती है कि वहाँ जाने से कुछ न कुछ काम का जुगाड़ हो जायेगा। बेरोजगारी बढ़ रही है। देश का विकास इस तरह का नहीं है कि जहाँ आप रह रहे हैं वहीं रोजगार के साधन उपलब्ध हो जाय। पहले भी जाना पड़ता था। आशा की जाती है कि ऐसे उद्यौगीकरण हो कि लोगों को रोजगार की सुविधा उसके इर्द-गिर्द मिले। पहले भी मजदूर दूर-दूर जाते थे। बिहार के मजदूर सब जगह काम की तलाश में जाते हैं। उनके साथ दुर्व्यवहार भी होता है। लेकिन उनकी मजबूरी है। पहले भी था यहाँ के गिरमिटिया मजदूर बाहर जाते थे। मरिसस आदि जगहों पर मजदूरों को अंग्रेज यहीं से ले गये। ये लोग वहीं बस गये। राम गुलाम आदि वहाँ के प्रधानमंत्री हुये। वहाँ पर जातिवाद नहीं है जैसा यहाँ पर है। यहाँ के जातिवाद का तिकड़म बहुत बुरा है।

संजय कुमार: जातिवाद का तिकड़म बहुत मजबूत हो रहा है।

अमरकांत: मजबूत हो गया है काफी। यहाँ जातियों का राजनीतिकरण हो गया है। पहले हम लोग जब बचपन में थे। और आजादी नहीं मिली थी, उस समय जातिवाद बहुत हल्के तौर पर ऊपर से चलता था राजनीति में। बलिया के कांग्रेस में बहुत पढ़े लिखे लोगों में थे कायस्थ और ब्राह्मण। इन दोनों में जातिवाद चलता था। ठाकुर उस समय गाँव में जमींदारी चलते थे। वे राजनीति में नहीं आये

थे। धीरे-धीरे वे भी जातियों के समीकरण को समझ पाये। आजादी के समय तथा थोड़ा बाद में हर जाति अलग-अलग ढंग से सचेत होती गयी। आाजादी मिलने के साथ ठाकुर राजनीति में आ गये। यानी राजनीति पहले ठाकुर नहीं करते थे।

संजय कुमार: क्या राजनीति में पहले ठाकुर नहीं थे।

अमरकांत: राजनितिक सचेत जिसको कहते है वह इनमें आयी आजादी मिलने के समय। आजादी मिलने के बाद तक बनिया नहीं थे। लेकिन बनिया भी राजनिति में आये। उत्तर प्रदेश में देखिये सी० वी० गुप्ता आये। ये बहुत बड़े कांग्रेसी नेता थे। इन्होंने बनियों का दल बनाया। इन्होंने यहाँ पर मेडिकल कॉलेज की स्थापना की। इस कॉलेज में उस समय डॉक्टर से लेकर समस्त कर्मचारी बनिया थे। इसके बाद छोटी जाति के चरण सिंह आये। इन्होंने छोटी जातियों को बहुत सचेत किया। छोटी जातियों के लोग चरण सिंह को अपना मानने लगे।

राजपूत सोसल बुनावट में पिछड़ी जाति में आता है। जैसे सोमवंसी क्षत्रियों में ऊपर का नहीं माना जाता या रघुवंशी ठाकुरों में ऊपर का नहीं माना जाता है। इसको इस तरह का विशेषण भले मिल गया हो लेकिन बचपन में हम जिस मुहल्ले में रहते थे। एक क्षत्री रहते थे। एक सोमवंशी हमारे भांजे के साथ घर आया। वह एम.ए. इंगलिस से पास होकर एक महाविद्यालय में शिक्षक था। हम लोगों ने उनकी लड़की से उसकी शादी करानी चाही। उन्होंने हम लोगों के प्रस्ताव को रिजेक्ट कर दिया। कहा 'इस सोमवंशी से कौन शादी करेगा। देखने में तो लगता है कितना सुन्दर है सोमवंशी, चंन्द्रवंशी आदि।

संजय कुमार: इन सब बातों को गहरायी से जाने वगैर इनके भीतर समाये मतभेद को समझना आसान नहीं है।

अमरकांत: ऊपर में यह सब बातें समझ में नहीं आती लेकिन उनके यहाँ है।

संजय कुमार: इस तरह का जातीय समीकरण का पेंच आपके बचपन से ही भारतीय समाज में थी कि अब हुयी।

अमरकांत: ये सब बातें बचपन की नहीं हैं। हिन्दुस्तान में ये बातें पहले थी।

संजय कुमार: जातिवाद का मामला पहले से ज्यादा गंभीर हुआ है या कम?

अमरकांत: यह पहले भी था। वह इतना था कि स्वाभाविक लगता था। अब जागरुकता आ गयी शिक्षा आ गयी। इस कारण अब अस्वाभाविक लगता है। देखिये हमारे घर में किसी मुसलमान के साथ बैठकर खाने की इजाजत नहीं थी। बचपन की एक घटना याद आती है। हमारे फूफा जी गाजीपुर में थे। उनके

यहाँ एक मुसलमान आया था। उसके साथ बैठकर मैं खाना खाने लगा। इस घटना को देखकर घर में तहलका मच गया। मैं तो बचपन से ही इन बातों में विश्वास नहीं करता। यानी जाति-पाति बहुत ज्यादा था। यहाँ तक कि सवर्ण हिन्दुओं में भी जाति-पाति था। दूसरी जाति में न खाना। एक घटना को बताता हूँ। एक हमारा क्लासफेलो था। वह हमारे घर आया उसको खाना दिया गया। वह बहाना बना गया। हम लोगों के बीच पार्टी के प्रति नशा था। इसके बावजूद वह नहीं खाया। मैं समझ गया इस तरह की भावना उसके भीतर जरूर है। ब्राह्मण सवर्णों के यहाँ कथा कहता है लेकिन खाने की जब बात आती है उस समय वह कच्चा भोजन नहीं लेता। आज मामला पूरी तरह से बदल चुका है। ब्राह्मण सबसे ज्यादा दूसरों के यहाँ भोजन कर रहे हैं। चीजे बहुत ज्यादा खत्म हो गयी हैं। लेकिन बाई हर्ट चीजें जल्दी खत्म नहीं होती। आज सवर्णों के अलावा सूद्रों में जातिगत जागरूकता बढ़ी है। इसके बावजूद ब्राह्मणों का बोलबाला पहले था और आज भी है।

संजय कुमार: आपकी रचनाओं में जाति का स्वरूप नहीं दिखता।

अमरकांत: रचनाओं में मैंने इन सब बातों को नहीं लिया है। अपने लेख में बता दिया है अपने बचपन के बारे में।

संजय कुमार: आपने 'अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ' की भूमिका में अपने बचपन के बारे में विस्तार से बात की है।' 'कुछ यादें कुछ बातें' में इलाहाबाद के बारे में बात की है।

अमरकांत: 'कुछ यादें कुछ बातें' में साहित्य जगत की बातों को किया है। देखिये मैं जाति-पाति को मानता नहीं हूँ। एक पत्रिका निकलती है 'अन्यथा'। उसमें हमने एक लेख अपने बारे में लिखा है। हमारे परिवार में तीन लोग थे। तीनों बट कर तीन पटिदार बन गये। हमारे गाँव भगलम पुर में अहिरों, दलितों तथा ठाकुरों के तीन ही टोले हैं। हमारा गाँव छोटा है। हमारे गाँव का स्ट्रक्चर बहुत दकियानूस था। मुझे बचपन याद है। वहाँ आदमी क्रय शक्ति विहीन था। और क्रय शक्ति कौड़ियों से होता था। गाँव के नजदीक ईट का भट्ठा था। वहाँ पर लोगों का पेमेंट कौड़ियों के माध्यम से होता था। मेरे पास भी उत्साह था देखने का कि कैसे कौड़ियों द्वारा मजदूरी दी जा रही है। देखने पर पाया कि सौ कौड़ियों के होने पर एक पाई मिलता था। रूपया, आना, पाई यह होता था। कौड़ियों का मूल्य बहुत कम था। सस्ताई होने के बावजूद लोग कुछ खरीद नहीं सकते थे।

पराधीन भातर में आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। अब तो क्रय शक्ति बढ़ी है लोगों में। लोगों के पास टेलीविजन, रेडियो भी हो गया है। पहले लोग कृतदास की तरह रहते थे। आज स्थितियाँ बदली हैं। राजनीतिक रूप से सशक्तिकरण लोगों के आत्मबल को बढ़ाया है।

संजय कुमार : आपको लोग प्रेमचंद से जोड़कर देखते है। प्रेमचंद ने रचना के माध्यम से जाति व्यवस्था तोड़ा है। आपकी रचना में ऐसी बात दिखाई नहीं पड़ती। इसकी वजह क्या हो सकती है?

अमरकांत: इसलिये नहीं है क्योंकि मैंने गाँव के बारे में नहीं लिखा। देखिये मैं शहर में आ गया। इस कारण निम्न मध्यवर्ग एवं मध्यवर्ग को ही अपने कथा साहित्य का हिस्सा बनाया। मैं चाहता था गाँव को अपनी रचना का हिस्सा बनाना। लेकिन नहीं बना पाया। गाँव का स्ट्रक्चर तेजी से बदल रहा है। उसको बिना गाँव मे रहे पकड़ना मुश्किल है। इसका कुछ जिक्र अपने लेखों में किया है।

संजय कुमार : सर मेरे शोध का विषय है 'अमरकांत के कथा साहित्य में मध्यवर्ग'।

अमरकांत : मेरे कथा साहित्य में मध्यवर्ग ही तो है। निम्न मध्यवर्ग तथा मध्यवर्ग।

संजय कुमार : आपसे सुनना चाहते हैं, किसको आप निम्न मध्यवर्ग या मध्यवर्ग कहते हैं। उसको कैसे कटेगराइज करना चाहेगें?

अमरकांत : निम्नमध्यवर्ग खास तौर से वह है जो मध्यवर्गीय करेक्टर का होता है। मध्यवर्ग उच्चवर्ग का ही रोल प्ले करना चाहता है। लेकिन वह होता नहीं है। मध्यवर्ग को पुष्ट करने के लिये मैंने नहीं लिखा। मैंने उसकी आलोचना करने के लिये ही लिखा है।

संजय कुमार: हाँ आपकी अधिकांस रचना यही कहती है कि मध्यवर्ग की विशेषता नहीं बल्कि उसकी आलोचना ही सामने आयी है। मध्यवर्गीय समाज की विसंगतियों को आपने सामने लाया।

अमरकांत: उसकी विसंगतियाँ है उसकी आलोचना है, उसकी तुच्छता है। मध्यवर्ग को वैचारिक रूप में मैंने कोई आदर्श नहीं माना है। इस वर्ग की समस्यायें हैं जैसे डिप्टी कलेक्टरी में पिता है उसका लड़का है। इस व्यवस्था में बेरोजगारी है निराशा है। इन सबको मैंने उठाया है।

संजय कुमार : डिप्टी कलेक्टरी को पढ़ने पर एक बात समझ आयी कि इसमें मध्यवर्गीय समाज में बढ़ती सामन्तवादी प्रवृत्तियों को ही सामने लाया गया है। क्या आप इससे सहमत हैं? सामन्तवादी प्रवृत्तियों के पोषक के रूप में चन्द्रिका प्रसाद को दिखाया गया है।

अमरकांत: सामन्तवादी प्रवृत्तियाँ उस तरह से नहीं हैं जैसे पहले हिन्दुस्तान में थीं। पहले सामन्त के घर हाथी बँधता था। मोटर से ज्यादा प्रचलन इसका था। नौकरशाही की प्रवृत्ति का उल्लेख इस कहानी में दिखाया गया है। मध्यवर्गीय समाज में गुलामी की पवृत्तियों के बढ़ते स्वरूप को सामने लाया गया है। इस वर्ग के लोग आसपास अपना रोबदाब स्थापित करना चाहते हैं। इस प्रवृत्ति का कारण भी था क्योंकि हमारे नेशनल मूवमेंट में समझोते से आजादी मिली थी। क्रांतिकारी प्रवृत्तियों एवं विचारों के शिक्षा द्वारा यह मिला होता तो शायद कुछ दूसरा रूप होता। इस शिक्षा को कौन देगा क्योंकि हमारा नेतृत्व समझौता करके आया था। नेताओं के पास कोई विजन नहीं था कि वह मध्यवर्गीय समाज को

कोई दिशा निर्देश दे सके। वह इस बात को करे और इसको नहीं करे। उसके पास तो मजबूरी थी कि अंग्रेजों द्वारा छोड़ी गयी व्यवस्था में अपने आपको फिट कर दे। आज भी हम उसी में फिट होने के लिये अभिशप्त है। किसी भी तरह के क्रांतिकारी परिवर्तन को हम देख नहीं पा रहे हैं। अभी बहुत से लोग ब्रिटिश हुकूमत की वकालत करते दिखायी पड़ते हैं। देश के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह अंग्रेजों की खूब तारीफ करते हैं। लोगों का कहना है अंग्रेजों के कारण हमारे देश में जनतंत्र आया। राजेन्द्र यादव कहते है कि अंग्रेज यहाँ नहीं आये होते तो यहाँ राजतंत्र रहता।

संजय कुमार: उन्होंने तो बकायदा लिखा है। दो तीन साल पहले हंस के संपादकीय में।

अमरकांत: यह सोचने का दिवालापन है। क्यों होता काहे होता। सामन्तवाद तो अभी भी है। शहर में आकर लोग वही करते हैं। ठेकेदारी दबंगयी सामन्तवाद का नया रूप है। बिहार में आज भी सामन्त हैं। जमीदारी उन्मूलन पूरी तरह से वहाँ नहीं हुआ। वहाँ सिलिंग नहीं लगा जबकि अन्य जगहों पर लगा। इसलिये वहाँ गरीबी आज भी अन्य जगहों से ज्यादा है।

संजय कुमार : उत्तरआधुनिकता साम्राज्यवादी शक्तियों की तरफ से विचारधारात्मक हमला है। यह अपने मूल से हटते हुये साम्राज्यवादी शक्तियों के मतलब को साथ रहा है। इसने रचनाकार और आलोचक को अलग-थलग कर दिया है। आलोचक एवं रचनाकार के बीच के संबंध के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं?

अमरकांत: उत्तरआधुनिकता हिन्दी साहित्य में इतना प्रभावशाली नहीं है। काफी रचनाकार हैं जो प्रगतिशील मूल्यों में विश्वास करते हैं। अपने समाज और देश तथा जो शोषित हैं उसी को लेकर सृजनरत हैं। उत्तरआधुनिकता एक विचार है जो पश्चिम से आयी। इसके कुछ लोग हैं जो नारे को बुलन्द किये हैं। हिन्दी में कुछ शहरों के लोग हैं जो इस पर काम कर रहे हैं लेकिन यह हिन्दी में बहुत प्रभावशाली विचारधारा के रूप में सामने नहीं आ रही है। वैसे जीवन तो बदलता जाता है। प्रेमचंद ने जो लिखा है वैसा तो लिखा नहीं जा सकता। टेक्नोलाजी ने बहुत कुछ बदल दिया है। प्रेमचंद के आगे के लेखकों की रचनाओं पर इन सारी चीजों का प्रभाव पड़ेगा। इस तरह से प्रेमचंद के जमाने से आज की रचनाओं में काफी फर्क आ गया है। मेरी कहानी 'हत्यारे' को प्रेमचंद के जमाने में नहीं लिखा जा सकता है। इसी तरह से रचनाओं का विकास होता है। जहाँ तक उत्तरआधुनिकता की बात है यह विचारधारा यहाँ पिट चुकी है। इसको सुधीश पचौरी जैसे लेखकों ने गंभीरता पूर्वक उठाना चाहा। लेकिन हमें नहीं लगता कि इसका कोई सर्वभारतीय असर है। हो सकता है कि सम्राज्यवादी शक्तियों का भेजा गया विचार हो। प्रगतिशील रूस से जुड़ी साम्यवादी व्यवस्था थी। अब बहुत कुछ ढीली पड़ गयी है साम्यवादी व्यवस्था भी। पहले जैसी प्रगतिशील रचनायें नहीं लिखी जा रहीं हैं। उसमें व्यक्तिवाद घुस गया है। वह आंदोलन बहुत क्षीण हो गया है। उत्तरआधुनिकता आंदोलन का कोई खास यहाँ असर रहा नहीं। उत्तर के रचनाकार बहुत कम हैं। जो लिखने की कोशिश करते हैं वे प्रभावशाली नहीं हैं। हिन्दी साहित्य की आलोचना में भी इसका प्रभाव नहीं देखा जा रहा हैं।

संजय कुमार: उत्तरआधुनिकता के बारे में यह कहा जा रहा है कि यह जिस उद्देश्य के साथ आगे बढ़ा था उस उद्देश्य से इसने अपने आपको अलग कर लिया।

अमरकांत: किस उद्देश्य को?

संजय कुमार: इसका शुरू में उद्देश्य था मार्जिनलाइज्ड को उसको केन्द्र में लाये।आज बहुत से लोग मान रहे हैं कि यह अपने मूल मतलब से अलग हो गया है।यह मार्जिनलाइज्ड चीजों को अलग-अलग इसलिये कर रहा है जिससे अपने फायदे को साध सके।

अमरकांत: हमेशा इस तरह की लड़ाई देखने को मिली है।पहले साफ लड़ायी होती थी कि आप कलावादी हैं या प्रगतिशील।इस तरह के नारों पर डिबेट किये तो वह नारेबाजी मात्र बनकर रह जाता है।उत्तरआधुनिकता के नारों को लेकर चलेगें तो वह एक ढर्रा बन जायेगा।ढर्रे पर बहुत ज्यादा दिन नहीं चला जा सकता है।इसलिये प्रगतिशील आंदोलन के बरक्स उत्तरआधुनिकता को लाया गया।इसी तरह से कलावाद को लाया गया।यह तो होता रहता है।साम्यवादी व्यवस्था में बहुत प्रश्नों को फेश नहीं किया जाता था।हमारा मानना यह है कि हम प्रजातांत्रिक देश में रहते हैं इस कारण समस्त विचारधाराओं पर खुले मन से विचार करना चाहिये।इस क्रम में जो विचारधारा टिकेगी वह आगे जायेगी।सम्राज्यवादी ताकतों की विचारधारा को सिरे से न नकार कर उसे मीट करना चाहिये।कैसे आप मीट करेगें।यहाँ भी बहुत सी जन शक्तियाँ हैं।प्रगतिशील आन्दोलन में इस तरह की बहुत सी समस्यायें थी।यह देखा गया है कि प्रगतिशील रचनाकार भी लाल सूरज आदि से रचना खत्म करते थे।यह भी एक तरह से अतिवाद था।

संजय कुमार: आपकी ज्यादा से ज्यादा रचनायें प्रगतिसील विचारधारा को सामने लाती हैं जबकि आप बहुत जगह स्वीकारें हैं कि आप शुरू में एन्टी प्रगतिसील थे?

अमरकांत: इस तरह के संगठनों में फतवे की जाती थी।नीलकांत ने तो लाल परिवार नामक रचना रची।भैरव प्रसाद ने भी इस तरह की रचना रची। 'अमेरिकन गेहूँ नहीं खायेंगे।' जो रियल्टी यथार्थ को स्वतंत्र रूप से नहीं स्वीकारता हैं तथा किताबी विचारधारा को सामने लाता है वह साहित्य नहीं है। साहित्य विरोधाभाषों को लेता है अंतर्द्वन्द्वों से गुजरता है।इन रास्तों पर न जाते हुये सिद्धान्त के आधार पर रिजल्ट पहले ही आप ला दें।ऐसे आप न तो आलोचना में पहुच सकते हैं और नही आप रचना में।रचना और आलोचक का संबंध बहुत निकट का संबंध है।उत्तरआधुनिकता बहुत ही बनावटी किस्म का विचार है।यह समकालीन विचारों को कन्ट्राडिक्ट करने के लिये सामने आया है।

संजय कुमार: देश की राजनीति से लेकर सामान्य जीवन तक को पूँजीवादी ताकतें निर्धारित कर रहीं हैं। इस स्थिति में कथाकार को पूँजीवादी ताकतों से निपटने के लिये रचना में किस तथ्य को केन्द्र में रखना चाहिये?

अमरकांत: कोई ऐसा एक तथ्य नहीं हो सकता है। समग्र मूल्य का अपना महत्व होता है। जनतंत्र के लिये किसी एक तथ्य को ही केन्द्र में रखना उचित नहीं है। जमीन पर इस तरह के आंदोलन हो जिससे समाज की कुवृत्तियों से लड़ सकें। साहित्यकार से किसी कुप्रवृत्ति पर रचना रचवाने से बेहतर है कि जनता को इस लायक बनाये कि बह रचनाकार द्वारा रची गयी रचना को पढ़ने की स्थिति में हो। जब तक सामान्य जन निरक्षर रहेगा तब तक रचनाकार चाहे जितना और जो लिखे उसका कुछ मतलब नहीं होगा। साहित्यक आन्दोलन तथा सांस्कृतिक आन्दोलन का प्रसार-प्रचार हो। ऐसा नहीं कि रचनाकार ने लिख दिया और उसका असर होना चालू हो गया। प्रेमचंद ने जो कुछ लिखा है उसका असर आज हो रहा है। उनके जमाने में उसका असर उस तरह से नहीं था जैसा आज हो रहा है। 'कलम का सिपाही' में अमृत राय ने लिखा है कि प्रेमचंद जव मरे उस समय कोई इस बात की नोटिस ही नहीं लिया। प्रेमचंद आज जितने महत्वपूर्ण हुये उस समय अर्थात **1936** में उतने महत्वपूर्ण नहीं थे। प्रेमचंद पढ़े जाते थे लेकिन ऐसी बात नहीं थी कि सामान्य व्यक्ति उनको पढ़कर आन्दोलित हो उठे। रचनाकार के विचारों को ले जाने का काम सांस्कृतिक कर्मियों का है। इनका काम यह होता है कि जन के बीच रचनाकार की रचना को ले जायें प्ले करें, मिटिंग करें। 'डिप्टी कलेक्टरी' मैंने लिख दी ऐसा नहीं कि उसका असर तुरन्त लोगों पर पड़ गया। बहुत से लोग ऐसे हैं जो इस कहानी के बारे में जानते तक नहीं।

संजय कुमार: सर यह तो ठीक है लेकिन रचनाकार रचना में जिन चीजों को रखेगा वहीं चीजें समाज में जायेंगी।

अमरकांत: देखिये! रचना में जो चीज रखी जाती है। भाई-भाई का प्रेम। आंदोलन चलाना चाहते हैं। प्रगतिशील आंदोलन चलाना चाहते है। जनता को जागरूक बनाना चाहते हैं। इस स्थिति में वही रचनायें जरूरी नहीं है जो भाई के प्रेम को सामने लाये बल्कि इससे संबंधित दूसरी संवेदना को भी सामने लाना चाहिये। एक समरसता के लिये कई तरह की संवेदना की जरूरत होती है। मान लीजिये शैलेश मटियानी जी को हिन्दू मानसिकता का रचनाकार कहा जाता है। लेकिन उनकी कुछ रचनायें ऐसी भी हो सकती हैं जो महत्वपूर्ण हो। इलाचंद्र जोशी की रचना महत्वपूर्ण हो सकती है। रचनाओं का प्रभाव आलोचक तथा जनता पर अलग-अलग होता है। जनता में रचनाओं के माध्यम से जागरुकता फैलाने के लिये हर तरह की रचनाओं की परीक्षा करनी चाहिये। इसमें कोई भी खड़ी लाइन नहीं रखनी चाहिये। बहुत ही उदार होना चाहिये।

संजय कुमार: सर आपने नयी कहानी आंदोलन के बारे में बहुत विस्तार से 'कुछ यादें कुछ बातें' तथा तद्भव में लिखा है। आज की पीढ़ी इस तरह के आंदोलन हेतु किसी ठीकरे को तवज्जुब नहीं दे रहीं

है।ऐसी स्थिति में आज की कहानी क्या आपकी पीढ़ी के कहानी के रचनाकारों की कहानियों की भाँति छाप छोड़ पायेगी?

अमकांत: हमारे समय जैसा साहित्यिक आन्दोलन आज नहीं है।प्रगतिशील या कलावादियों का आंदोलन उस समय जोर पर था।परिमल संस्था थी जिसके बैनर तले उस विचारधारा से संबंधित लोग एक जगह इकट्ठे होते थे।यहीं इलाहाबाद में गोष्ठियाँ, संगोष्ठियाँ होती रहती थी लेकिन आज कुछ नहीं हो रहा है।आज संगोष्ठी होने का मतलब है सरकारी चंदे को लाना।स्वेच्छा से कोई संगोष्ठी नहीं हो रहा है।इस क्षेत्र में राजनीतिक पार्टियों की तर्ज पर काम नही हो सकता कि उसके दल में वह नहीं जायेगा तथा इसके दल में यह।प्रगतिशीलों ने इस तरह से करना चाहा लेकिन वे सफल नहीं हो सके।

संजय कुमार: आजकल के कहानीकार अलग-थलग से दिखते हैं उसमें कोई एकबद्धता नहीं है।एक साथ मिलकर कहानी की विधा को आगे नहीं बढ़ा पा रहे हैं।ऐसी स्थिति में क्या इस बात से डरना नहीं चाहिये कि इतना उत्तम प्रयास समय के प्रवाह कहीं बह न जाय।

अमरकांत: पहले जैसे संगठन आज नहीं है।

संजय कुमार: कथा साहित्य पर जिस तरह से शोध कार्य हो रहा है उस तरह से स्वतंत्र आलोचना की पुस्तकें सामने नहीं आ रहीं हैं।क्या कारण हो सकता है?

अमरकांत: उपन्यास पर लिखना, न तो कोई पढ़ता है न लिखता है।हमारे साहित्य पर बहुत सही शोध नहीं हो रहा है।शोध इसलिये होता है कि इसे नौकरी से जोड़ा गया है।हमारे साहित्य पर कइयों ने तो बहुत लापरवाही से शोध किया है।जबकि करने वाले अध्यापक भी हैं।वैसे आलोचना लिखी नहीं जा रहीं है।कविता पर आलोचना दिख जाता है लेकिन कथा साहित्य पर किया गया काम संदेह के दायरे में आता है।वैसे पी.एच. डी. पर जमकर काम करने से उसका मूल्य नहीं होता।

संजय कुमार: आपने कहानियों के माध्यम से समाज में फैली जिन सामन्तवादी प्रवृत्तियों की तरफ संकेत दिया, आज वह गहराया है।'डिप्टी कलेक्टरी', 'जन्म कुंडली' 'पलास के फूल' आदि के सृजन के बावजूद आपकी कुछ ही कहानियों की चर्चा की जाती है।क्या कारण हो सकता है?

अमरकांत: वही चीज है।कोई समग्र अलोचना लिखता ही नहीं।बहुत से लोग हैं जो बिना रचना पढ़े आलोचना लिखते हैं।जबकि पूरी रचना पढ़ने से ही समग्र आलोचना दृष्टि का निर्माण होता है।इसके साथ आलोचक की अपनी दृष्टि है कि नहीं, यह मायने की बात है।आप रचना के परिप्रेक्ष्य में तथा परम्परा की दृटि से कैसे देखते हैं।इसका बहुत महत्व है।परम्परा की व्याख्या करने के लिये समकालीन रचनाकारों की रचना को पढ़ना बहुत जरूरी है।मात्र संबंधित रचनाकार की रचना को पढ़कर परम्परा दृष्टि का निर्माण नहीं हो सकता।पूरी परंपरा के अध्ययन से आप स्थिति विशेष का सही अध्ययन कर सकते हैं।स्वतंत्र रूप से किसी का मूल्यांकन नहीं हो सकता।

संजय कुमार: हमारे यहाँ साहित्यकार को दूरद्रष्टा कहा जाता है। आपने बहुत पहले अपनी कहानियों में आज के व्यक्ति की महात्वाकांक्षा को रूपायित किया था। सामाजिक संरचना में व्यक्ति की इस सोच का स्रोत आपको कहाँ से मिला? जैसे 'हत्यारे' 'छिपकली' 'लड़की की शादी' आदि। आप कह रहे हैं कि मेरे पात्र शहरी मध्यवर्ग से संबंधित हैं लेकिन इस तरह के पात्र तो शहर में दिखायी पड़ते नहीं।

अमरकांत: हमारे कथा साहित्य के विषय समाज तथा जीवन से आये हैं। समाज को समझने की गहरी रुचि का परिणाम हैं हमारे विषय। लेखक सांस्कृतिक क्षेत्र में जब परिवर्तन चाहता है उस समय समाज के व्यक्तियों को ढूढता है। 'लड़की की शादी' जैसी कहानियाँ मध्यवर्गीय समाज के बीच कथनी तथा करनी के फर्क को सामने लाने वाली हैं। आजादी के बाद बहुत ऐसे चरित्र उभरे थे। स्वतंत्रता-आंदोलन के समय हम लोग अपनी माँ से कहा करते थे कि देश आजाद होगा, देश में घी दूध की नदियाँ बहेंगी। स्वातंत्र्योत्तर भारत में बहुत से लोगों ने जीवन को स्वार्थ तथा अवसरवाद से जोड़ लिया। जबकि उसमें बहुत से लोग ऐसे थे जिन्होंने इसके लिये कठिन कुर्बानियाँ दीं। इस फर्क को सामने लाने के लिये कहानियों को मैने लिखा। कहानियों के विषय को हमने जीवन से प्राप्त किया है। जीवन ने ही मुझे विषय दिया है। आजादी के बाद 'डिप्टी कलेक्टरी' अपने भाई को ध्यान में रखकर लिखा। भाई आइ.ए.एस. के लिखित में पास हो जाते थे लेकिन इन्टरव्यू में कभी पास नहीं होते थे। मैं खुद राष्ट्रीय आन्दोलन का हिस्सा रहा हूँ। मेरे साथी किस रास्ते से कहाँ गये मुझे मालूम है। 'हत्यारे' कहानी इन्हीं स्थितियों की छाया है। इसमें दिखाया गया है कि किस तरह से युवक दिशाहीन होता जा रहा है इसको सामने लाया गया है। मेरी कहानियों का व्यक्ति अज्ञेय नहीं है। वह उसी समाज से लाया गया है जिसके हम गवाह हैं। कई ऐसी कहानियाँ हैं जिसमें इस बात को सामने लाया गया है।

संजय कुमार: डॉ.परमानन्द श्रीवास्तव ने लिखा है "अमरकांत में कभी-कभी वह व्यंग्यकार भी चौकन्ना दिखाई देता है जिसे गद्य के पाठक हरिशंर परसायी जैसे लेखकों के यहाँ पाते हैं।" तथा मधुरेश का कहना है "अमरकांत के समकालीन जहाँ स्थिति विशेष पर व्यंग्य करते हैं वहाँ अमरकांत की कहानियों में बहुधा ही व्यंग्य एक प्रछन्न अंतर्धारा प्रवाहित रहती है जो पूरी व्यवस्था को छूती और छीलती चलती है।" जबकि आप स्वीकारते हैं "हम लोगों का जो एटीच्यूड है वह कहानी की विधा में चीजों को कहना है हास्य व्यंग्य का सिर्फ सहारा लिया गया है। हास्य व्यंग्य के हम लेखक नहीं हैं।" क्या कारण है?

अमरकांत: हरिशंकार परसायी समग्र रूप से हास्य व्यंग्य के लेखक हैं लेकिन मैं समग्र रूप से हास्य व्यंग्य का लेखक नहीं हूँ। मेरी रचना में हास्य व्यंग्य का इस्तेमाल है। दुनिया के बहुत से रचनाकार हैं जिनके कथा साहित्य में हास्य व्यंय का चित्रण मिलता है। भावनाओं को सीधे सामने लाना कठिन है। व्यापक रूप से चीजों को सामने लाने के लिये हास्य व्यंग्य का सहारा लेना पड़ता है। निर्मल वर्मा जैसे कथाकारों की तरह मात्र मन की आंतरिक बातों का वर्णन करना नहीं है। मुझे तो समग्र जीवन को लेना है। जीवन को लेते समय हर प्रकार के संवेगों का सहारा लेना पड़ता है। हास्य व्यंग्य का भी सहारा लेना पड़ता है। हास्य व्यंग्य कथाकार के लिये बहुत जरूरी सहारा होता है। रचनाकार विवरण भी देता हो उस समय

उसको हास्य व्यंग्य सहायता पहुचाता है। अन्यथा विवरण नीरस हो जायेगा। लेखक का एक कौशल होता है जो हास्य व्यंग्य का उपयोग करता है।

संजय कुमार: हिन्दी साहित्य के आपके समकालीन कहानीकारों ने उस तरह से हास्य व्यंग्य को सामने नहीं रखा जिस तरह से आपने रखा है। इसका कारण क्या है?

अमरकांत: यह उनका एटीच्यूड है। लेकिन भीष्म साहनी है।

संजय कुमार: भीष्म साहनी की कहानियाँ सीधी हैं उसमें हास्य व्यंग्य दिखायी नहीं देता। शेखर जोशी, अज्ञेय, निर्मल वर्मा आदि में हास्य व्यंग्य नहीं है। मात्र ज्ञान रंजन के यहाँ दिखायी पड़ता है।

अमरकांत: हास्य व्यंग्य कथाकार के लिये बहुत बड़ा सहारा है। अगर बड़े फ्रेम पर लिखेगें तब इसकी जरूरत होगी। 'डिप्टी कलेक्टरी' 'जिन्दगी और जोंक' में हास्य व्यंग्य हैं।

संजय कुमार: आपकी कहानियों के व्यक्ति चित्र बहुत मजबूत हैं। वे ऐसे खड़े होते हैं कि एक बार दिमाग में बैठ जाने पर निकलते नहीं। ये सारे व्यक्ति क्या आपके अपने बहुत नजदीक के हैं या ऐसे चलते फिरते हैं।

अमरकांत: कुछ पात्र कल्पना के हैं कुछ वास्तविक हैं। भारत भूषण अग्रवाल को 'दोपहार का भोजन' बहुत पसन्द था। इस कहानी ने साहित्यिक जगत में मुझे पहचान दिलायी।

संजय कुमार: उपन्यासों के पात्र अधिकांशत: मध्यवर्गीय समाज के हैं 'आकाश पक्षी को छोड़कर' मध्यवर्गीय समाज की विसंगतियों को जिस तरह से आपने सामने लाया उस प्रकार इस वर्ग की विशेषताओं को सामने नहीं लाया गया है। विशेषताओं की मात्र सूचना भर दी गयी है। इसकी वजह क्या है?

अमरकांत: असल बात है कि एक तो आदमी परफेक्ट नहीं है जितना वह दिखता है वह उतना नहीं है। जब आप लिखने जाते हैं उस समय आप इस तथ्य को नजर अंदाज नहीं कर सकते। यह तथ्य हमेशा सामने रहता है कि आदमी जो कहता है। उसको पूरी तरह से कर नहीं सकता। आदमी कमजोरियों का पुलिंदा है।

संजय कुमार: आप 'परायी डाल का पक्षी' के नायक की जब बात करते हैं उस समय इस वर्ग की किसी विशेषता को सामने नहीं लाना चाहा है जबकि इस वर्ग की अपनी कुछ न कुछ विशेषतायें भी हैं।

अमरकांत: विशेषता का वर्णन करना प्रभावशाली नहीं होता। प्रेमचंद तथा उनसे पहले के रचनाकार अपने हीरों का बहुत वर्णन करते थे। हमारे यहाँ हीरो नहीं है। मैं किसी हीरो को मानता भी नहीं। वैसे हीरो रहे नहीं।

संजय कुमार: आपके कई उपन्यासों में प्रेम शरीर केन्द्रित है। हिन्दी साहित्य में अज्ञेय एवं राजकमल चौधरी ने भी ऐसा किया था। क्या आपकी रचना पर भौतिकवादी समाज का प्रभाव है?

अमरकांत: प्रेम शब्द ही ऐसा है जिसमें शारीरिक संबंथ सामिल होता है। हमारे यहाँ प्रेम ठोस नहीं है। प्रेम का मतलब शारीरिक संबंध सामिल हो। हाथ को चूमना भी शारीरिक संबंध है।

संजय कुमार: आपने कहानियों के बाद उपन्यास को लिखा। आपकी कहानियाँ क्या आपके उपन्यासों का निचोड़ मानी जाय।

अमरकांत: वह उपन्यासों का निचोड़ नहीं हैं। उपन्यास लिखने के लिखने के लिये आपके पास अनुभव का होना जरूरी होता है। यह उम्र के साथ बढ़ता है। सब औपन्यासिक अनुभव हो जाता है। बहुत कम ऐसे लोग होते हैं जो शुरू में ही उपन्यास लिख दिये हों। प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, अज्ञेय आदि ने उपन्यास बाद में लिखा। उपन्यास लिखने के लिये समय की जरूरत होती है। हिन्दुस्तान में लेखक को समय बहुत मुश्किल से मिल पाता है। वह हर समय आर्थिक तंगी में रहता है। एक जगह स्थिर होकर किसी भी रचनाकार के लिये उपन्यास लिखना बहुत मुश्किल होता है।

संजय कुमार: बांग्ला तथा मराठी सहित्य के उन्नत होने के पीछे एक वजह यह है कि उसके पाठक अपने रचनाकार को अच्छी तरह से पढ़ते हैं समझते हैं। उनके यहाँ पुस्तकों को खरीदने का अच्छा चलन है। जबकि हिन्दी में ऐसी बात नहीं है। इसी कारण हिन्दी समाज प्रेमचंद को छोड़कर अन्य कथाकार को जानता तक नहीं। क्या हिन्दी समाज की दुर्गति में इसकी बड़ी भूमिका है?

अमरकांत: हाँ हिन्दी समाज की दुर्गति में इसकी बड़ी भूमिका है।

संजय कुमार: युवा पीढ़ी के कहानीकारों की स्थिति वरिष्ठतम कहानीकारों से किस तरह से अलग है। उनकी स्थिति कैसी है?

अमरकांत: देखिये इस प्रकार का प्रश्न नहीं करना चाहिये। अभी तो वह नया पौधा है उसको ऊँगली नहीं दिखाना चाहिये। नये हैं प्रयास कर रहे हैं। आगे चलकर कौन क्या हो जायेगा आप कुछ कह नहीं सकते। जो नवयुवक हैं उनको लिखने दीजिये। जब हम भी लिख रहे थे उस समय बहुत से लोग हास्यास्यप्रद ढंग से पूछते थे 'आप क्या भूख की कहानियाँ' लिखते हैं। पीढ़ियाँ दर पीढ़ियाँ आती हैं। लिखी जाती हैं। बहुत सी रचनायें लिखी जाती हैं। चीजे वही स्टैण्ड करती हैं जो बेस्ट होती

हैं। लेखन एक परम्परा होती है उसकी तुलना नहीं करनी चाहिये। किसी का किसी से तुलना नहीं करनी चाहिये।

संजय कुमार: आज आत्मकथा लिखने का प्रचलन बहुत जोर से चला है। 'अन्या से अनन्या', 'एक कहानी यह भी', 'गुड़िया भीतर गुड़िया', जैसी आत्मकथायें लिखी जा रहीं हैं, चर्चित भी हो रहीं हैं। 'कुछ यादें कुछ बातें' आत्मकथा नहीं है वह संस्मरण है। आपकी ऐसी कोई योजना है?

अमरकांत: हमारी इस तरह की कोई योजना नहीं है। लोग लिख रहे हैं तो लिखने दीजिए। गोर्की ने आत्म कथा लिखी है, टालस्टाय ने लिखा है। बहुत से लोगों ने लिखी है। गोर्की का जीवन बहुत रोचक है कि किस तरह से वे मजदूर समाज से उठकर लेखक बने। यह महत्वपूर्ण चीज है। अगर रचना अच्छी न होकर आत्मकथा ही अच्छी हो जाय तो बहुत अच्छी चीज है। वैसे हिन्दी में बहुत कम आत्मकथा लिखी जाती है।

संजय कुमार: महिला कथाकारों की बात समझ में आती है। वे महत्वपूर्ण रचना भी दे रहीं है। दलित कथाकारों की रचनायें समय के प्रवाह में किस तरह टिकेंगी। 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास' में दलित साहित्य के नाम से बच्चन सिंह ने एक विभाग खोल रखा है।

अमरकांत: 'पाखी' पत्रिका में कँवल भारती द्वारा नामवर सिंह को जबाब देते हुये दलित रचना की महत्ता को सामने लाया गया है। फिलहाल इस चक्कर में नहीं पड़ना चाहिये। इस समय दलित साहित्य निर्माण के दौर से गुजर रहा है। इस समय आरक्षण के मूड में है। उनका लिखना ही बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि उनको लिखने की सुविधा सदियों से मिली ही नहीं। अब जब अधिकार मिला है लिख रहे हैं तो उसको तो महत्वपूर्ण मानना चाहिये। दलितों को बहुत दबाया गया। द्रोणाचार्य ने तो एकलव्य का अगूँठा ही काट लिया। रामचन्द्र ने शम्बूक का वध ही कर दिया। यह दलितों के लिये बहुत बड़ी घटना है। इसको स्वीकारना चाहिये। गाँव में दलितों की जो हालत थी वह बहुत खराब थी।

संजय कुमार: उत्तर भारत के गाँवों में दक्षिण तरफ दलितों का घर बनाया जाता था। समाज का सवर्ण उसी दिशा में झाड़ा फिरने जाता था।

अमरकांत: हमारे गाँव में दलितों का घर दक्षिण तरफ है। वहाँ भी सवर्ण झाड़ा फिरने जाते हैं दक्षिण तरफ।

संजय कुमार: अभी आप क्या लिख रहे हैं?

अमरकांत: लिखा हुआ एक उपन्यास है। उसको अभी रीराइट करना है। पत्रिकारिता पर 'कवर का सूरज' का एक अंश राची की पत्रिका में आया है। उपन्यास लिखने के लिये समय चाहिये। योजना है दो तीन उपन्यास लिखने की। देखिये लिख पाता हूँ या नहीं। शुरू सब कर दिया है थोड़ा बहुत।

संजय कुमार: आपकी कहानियों में महिलाओं की समस्या ज्यादा है। क्या कारण है ?

अमरकांत: महिलायें ज्यादा शोषण का शिकार होती हैं, और उनको अधिक संघर्ष करना पड़ता है आगे आने के लिये। मर्द महिलाओं से ज्यादा स्वतंत्र है। महिलाओं के बिना समाज चल नहीं सकता। इस कारण इनके संघर्ष को सामने लाया गया है।

संजय कुमार: आपकी कहानियों में मुहावरे प्रचुर मात्रा में मिलते हैं।

अमरकांत: जब आप कोई चीज जनता से उठायेंगे उस समय मुहावरें मिलेगें। 'डिप्टी कलेक्टरी' कहानी जनता से ली गयी है इसमें मुहावरा है 'पहली भूख प्यास का लड़का' यह शहरों के सो काल्ड शिक्षितों में नहीं बोला जायेगा। इसको सामान्य जनता ही बोलेगी। यह वाक्य एक साधारण जनता की महिला के द्वारा बोला गया है। मुझको मुहावरों का बहुत शौक है। मेरे लिये दुर्भाग्य है कि मैं यहाँ पड़ा हूँ। मध्यवर्गीय समाज में वह भी कटा हुआ। मैं बहुत मिक्सिंग नेचर का हूँ सामान्य जन से मैंने इन मुहावरों को लिया है। मुझे मुहावरे अच्छे लगते हैं।

संजय कुमार: 'इन्हीं हथियारों से' रचना में श्रीराम वर्मा कहाँ हैं। रचना में निलेश का संघर्ष आपके संघर्ष से मेल खाता है। उसके द्वारा किये गये राष्ट्रीय मुक्ति का संघर्ष तथा अंत समय में उससे अपने आपको अलग कर लेना अपके संघर्ष से मेल खाता है।

अमरकांत: रचना में लेखक की अपनी पर्सनाल्टि रहती है। लेकिन जो चरित्र बनाये जाते हैं लेखक द्वारा वह उसका अपना नहीं होता। अपना भी होता है दूसरों का भी उसमें मिला होता है। वह एक टाइप चरित्र का निर्माण करता है। चरित्र में बहुत कुछ मिलता है तब वह टाइप बनता है। इससे वह चरित्र सब जगह लागू हो सकता है। लेखन विशेषीकृत नहीं होता। कोई रचनाकार अपने पर नहीं लिखेगा। अपने पर लिखेगा तो वह आत्मकथा होगी। जब हम टालस्टाय को पड़ते हैं उस समय उनके द्वारा प्रस्तुत किये गये टाइप चरित्रों को ही पसन्द करते हैं। इसका बढ़िया उदाहरण है 'वार एण्ड पीस'।

N.B.U. DARJEELING

शोधार्थी द्वारा पूछे गये पश्नों को पढ़ते हुये

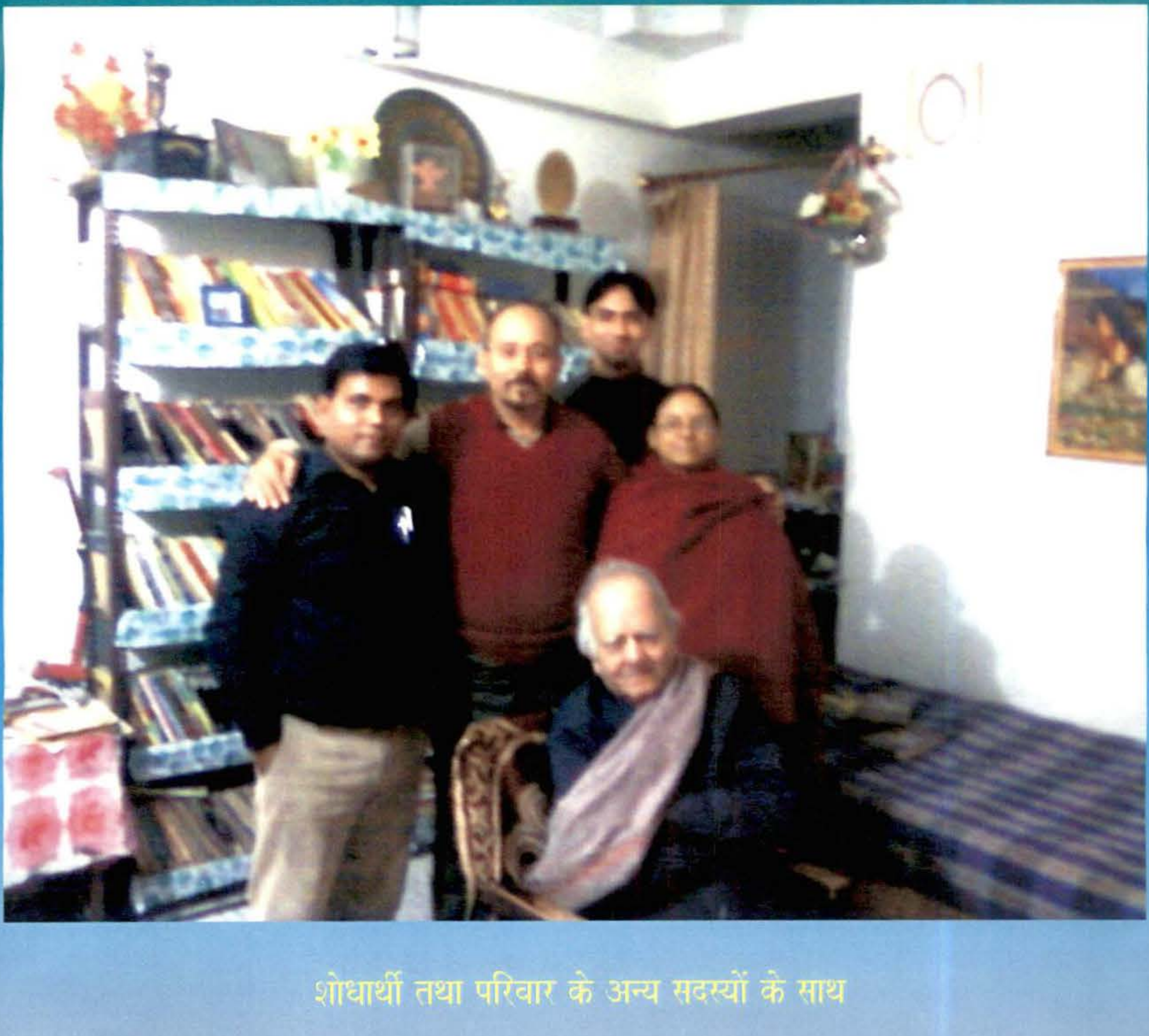

शोधार्थी तथा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ

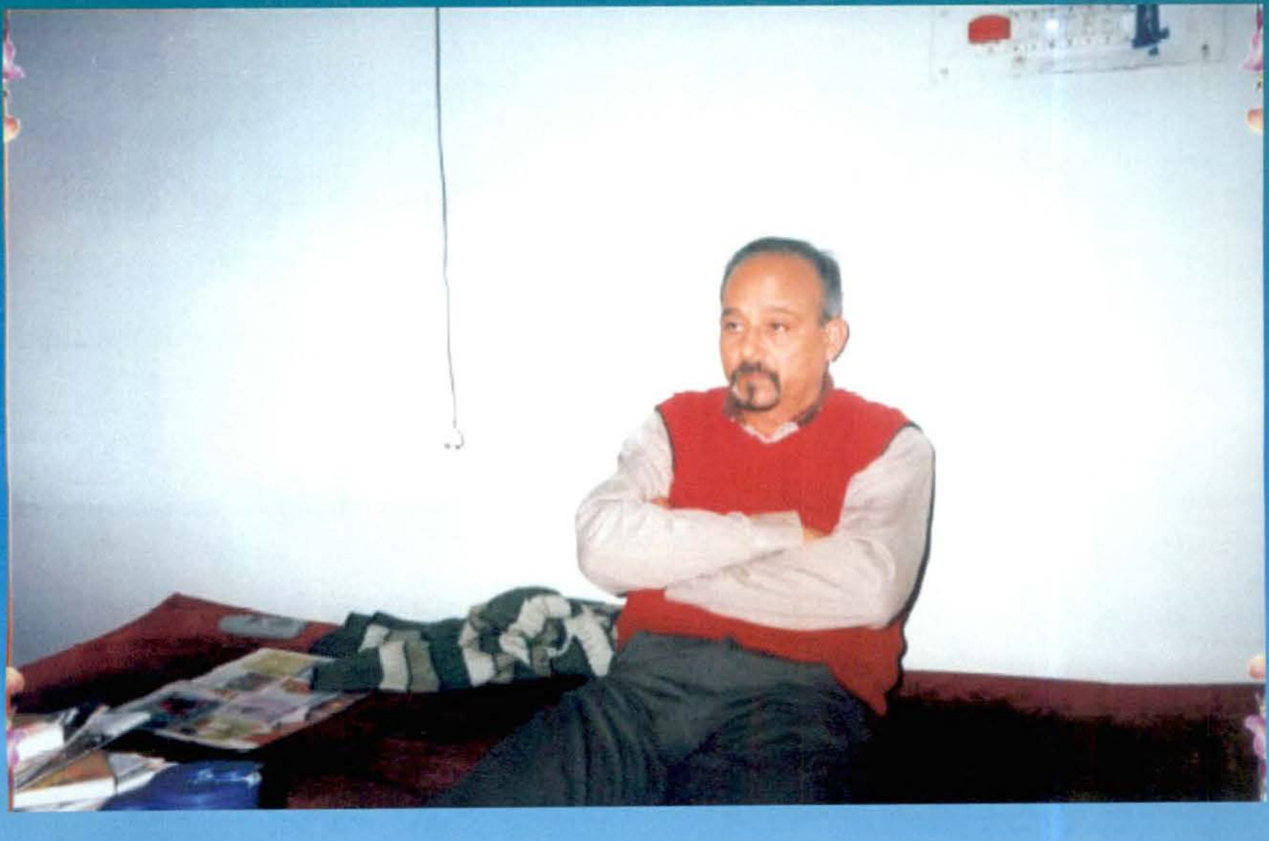

अमरकांत जी के साहित्य के सरक्षक की भूमिका में पुत्र श्री अरविन्द जी

संक्षिप्त संकेत सूची

डॉ.	डॉक्टर
प्र.	प्रकाशन
व.	वर्ष